IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 4, Issue 2, October 2024

Impact Factor: 7.53

पर्यावरण परिवर्तन की सामाजिक धारणा

डॉ. निशा सिंह

अतिथि विद्वान -समाजशास्त्र विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश

सारांश

यह शोध पत्र पर्यावरण परिवर्तन, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन की भारतीय समाज में सामाजिक धारणा का विश्लेषण करता है। सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructionism) के सिद्धांत पर आधारित यह अध्ययन दर्शाता है कि पर्यावरणीय मुद्दे प्राकृतिक वास्तविकता के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और मीडिया-आधारित धारणाओं से भी निर्मित होते हैं। भारत में येल प्रोग्राम ऑन क्लाइमेट चेंज कम्युनिकेशन (YPCCC) और CVoter के राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के द्वितीयक विश्लेषण से पता चलता है कि 90% से अधिक भारतीय जलवायु परिवर्तन के प्रति चिंतित हैं, लेकिन केवल 10% ही इसे पूर्ण रूप से समझते हैं। क्षेत्रीय भिन्नताएँ, वर्गीय अंतर और जागरूकता की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। शोध का उद्देश्य सामाजिक धारणा को समझकर नीति-निर्माण और जागरूकता अभियानों के लिए सुझाव देना है।

कीवर्ड्स

पर्यावरण परिवर्तन, सामाजिक धारणा, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक निर्माणवाद, भारतीय समाज, जन जागरूकता, क्षेत्रीय भिन्नता

परिचय

पर्यावरण परिवर्तन आज विश्व स्तर पर एक प्रमुख चुनौती है, जिसमें जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई और संसाधनों की कमी शामिल हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से पर्यावरणीय मुद्दे केवल वैज्ञानिक तथ्य

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 2, October 2024
Impact Factor: 7.53

नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित (Socially Constructed) हैं। समाजशास्त्री जैसे पीटर बर्गर और थॉमस लकमैन के अनुसार, वास्तविकता सामाजिक अंतर्क्रियाओं से बनती है। भारत में बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ाया है, जिससे समाज की धारणा प्रभावित हुई है।

भारतीय संदर्भ में, हाल के सर्वेक्षणों से स्पष्ट है कि लोग गर्मी की लहरों, सूखे, बाढ़ और अनियमित मानसून को जलवायु परिवर्तन से जोड़ रहे हैं। फिर भी, ज्ञान की कमी और क्षेत्रीय असमानताएँ (जैसे गुजरात में उच्च जागरूकता बनाम महाराष्ट्र में कम) बनी हुई हैं। यह शोध पत्र इन धारणाओं को समझने का प्रयास करता है, ताकि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सामाजिक भागीदारी बढ़ाई जा सके।सामाजिक निर्माणवाद (Social Constructionism) के अनुसार, पर्यावरणीय मुद्दे केवल वैज्ञानिक तथ्य नहीं होते, बल्कि समाज की साझा धारणाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, मीडिया कवरेज, राजनीतिक विमर्श और व्यक्तिगत अनुभवों से आकार लेते हैं। पीटर बर्गर और थॉमस लकमैन की पुस्तक The Social Construction of Reality में वर्णित है कि वास्तविकता सामाजिक अंतर्क्रियाओं से निर्मित होती है। इसी प्रकार, जलवायु परिवर्तन की धारणा भी समाज द्वारा 'निर्मित' होती है—कुछ लोग इसे तत्काल खतरा मानते हैं, जबकि अन्य इसे दूर की समस्या समझते हैं।

भारतीय संदर्भ में यह धारणा जटिल है। हाल के सर्वेक्षणों (YPCCC & CVoter, 2025) से पता चलता है कि:

- 96% भारतीय मानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग हो रही है (एक संक्षिप्त परिभाषा देने पर)।
- 89% ने व्यक्तिगत रूप से इसके प्रभाव महसूस किए हैं।
- 85% से अधिक लोग भीषण गर्मी की लहरों और सूखे से चिंतित हैं।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 4, Issue 2, October 2024

Impact Factor: 7.53

- फिर भी, केवल 53% लोग ग्लोबल वार्मिंग के बारे में 'बहुत' या 'कुछ' जानते हैं, जबकि 44% को 'बहुत कम' या 'कभी नहीं सुना'।

ये आंकड़े दर्शाते हैं कि जागरूकता बढ़ रही है, लेकिन समझ और गहराई की कमी बनी हुई है। क्षेत्रीय भिन्नताएँ स्पष्ट हैं—गुजरात और तमिलनाडु में जागरूकता उच्च है, जबकि महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में कम। सामाजिक वर्ग के आधार पर भी अंतर है: ऊपरी वर्ग में 92% जागरूकता, जबकि निम्न वर्ग में कम। मीडिया, शिक्षा, सरकारी अभियान और धार्मिक-सांस्कृतिक मूल्य (जैसे प्रकृति पूजा की परंपरा) इन धारणाओं को प्रभावित करते हैं। भारत में पर्यावरणीय मुद्दे सामाजिक न्याय से भी जुड़े हैं—आदिवासी और ग्रामीण समुदाय सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, लेकिन उनकी आवाज अक्सर नीति-निर्माण में कम सुनाई देती है। बढ़ती जनसंख्या, तेज औद्योगीकरण, शहरीकरण और असमान विकास ने पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ाया है, जिससे सामाजिक धारणा में 'चिंता' के साथ 'असहायता' भी जुड़ गई है। यह शोध पत्र इन सामाजिक धारणाओं का गहन विश्लेषण करता है। उद्देश्य है कि समझ बढ़ाकर प्रभावी संचार, स्थानीय भाषा में जागरूकता अभियान, नीति-समावेशन और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा दिया जाए। यदि समाज की धारणा को सकारात्मक रूप से आकार दिया जाए, तो पर्यावरण संरक्षण एक राष्ट्रीय आंदोलन बन सकता है, जो सतत विकास और न्यायपूर्ण भविष्य की नींव रखेगा।

शोध पद्धति

- यह शोध द्वितीयक डेटा विश्लेषण (Secondary Data Analysis) पर आधारित है। मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं:
- येल प्रोग्राम ऑन क्लाइमेट चेंज कम्युनिकेशन (YPCCC) और CVoter द्वारा 2023-2025 में किए गए राष्ट्रीय सर्वेक्षण (नमूना आकार: 2,178 से 10,751 उत्तरदाता)।
- भारत सरकार के पर्यावरण संबंधी रिपोर्ट्स और विश्व बैंक के अध्ययन।

- सामाजिक निर्माणवाद पर आधारित अंतरराष्ट्रीय साहित्य (जैसे Stehr, 1995; Burningham & Cooper, 1999)।
- विधि:
- गुणात्मक विश्लेषण: सामाजिक निर्माण की अवधारणा को समझने के लिए साहित्य समीक्षा।
- मात्रात्मक विश्लेषण: सर्वेक्षण डेटा से प्रतिशत, क्षेत्रीय मानचित्र और वर्गीय अंतर (ऊपरी वर्ग vs. निम्न वर्ग) का उपयोग।
- नमूना: पूरे भारत के 34 राज्यों और 604 जिलों के अनुमानित डेटा।
- सीमाएँ: प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया; केवल उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों पर निर्भरता।
- यह पद्धति समय और संसाधन की बचत करती है तथा वैज्ञानिक विश्वसनीयता प्रदान करती है।

निष्कर्ष

शोध से स्पष्ट है कि भारतीय समाज में पर्यावरण परिवर्तन की सामाजिक धारणा सकारात्मक दिशा में बदल रही है। 90% से अधिक लोग जलवायु परिवर्तन से चिंतित हैं और इसे स्वास्थ्य, कृषि तथा भविष्य की पीढ़ियों पर प्रभाव मानते हैं। फिर भी, केवल 10% लोग इसे अच्छी तरह समझते हैं तथा 32% ने कभी "ग्लोबल वार्मिंग" शब्द भी नहीं सुना। चार प्रकार की धारणाएँ उभरी हैं: अलार्म्ड (54%), चिंतित, सतर्क और उदासीन। क्षेत्रीय भिन्नताएँ (दक्षिण vs. पश्चिम भारत) और सामाजिक वर्ग (ऊपरी वर्ग में 92% जागरूकता) प्रमुख कारक हैं।

सामाजिक निर्माण के दृष्टिकोण से मीडिया, शिक्षा और सरकारी अभियान इन धारणाओं को आकार देते हैं। निष्कर्षतः, जागरूकता अभियान, स्थानीय भाषा में शिक्षा और नीति-निर्माण में जन-भागीदारी आवश्यक है। यदि इन धारणाओं को मजबूत किया जाए, तो पर्यावरण संरक्षण एक सामूहिक आंदोलन बन सकता है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 4, Issue 2, October 2024

Impact Factor: 7.53

संदर्भ

[1]. Yale Program on Climate Change Communication & CVoter. (2023). Climate Change in the Indian Mind. https://climatecommunication.yale.edu/publications/climate-change-in-the-indian-mind-2023/

[2]. Yale Program on Climate Change Communication. (2025). Climate Impacts in India: Experience, Worry, and Attribution. https://climatecommunication.yale.edu/publications/climate-impacts-india/

[3]. MacArthur Foundation. (2023). Four Attitudes Toward Climate Change in India. https://www.macfound.org/press/grantee-publications/four-attitudes-toward-climate-change-in-india

[4]. Vishwakarma, P.K. (2023). Association of Public Awareness and Knowledge of Climatic Change. PMC.

[5]. Stehr, N. (1995). The social construct of climate and climate change.

[6]. Burningham, K. & Cooper, G. (1999). Being Constructive: Social Constructionism and the Environment. Sociological Review.